Dr Anshu Pandey
Assistant Professor
History department

Unit – III :
आधुनिक बिहार की शुरुआत
(Beginning of Modern Bihar)

यूरोपीय व्यापारिक विस्तार और बिहार की आर्थिक संरचना में परिवर्तन

18वीं शताब्दी के मध्य तक आते-आते यूरोपीय व्यापारिक कंपनियों के बीच प्रतिस्पर्धा तीव्र हो गई थी। अंग्रेज़, फ्रांसीसी और डच व्यापारी भारत के विभिन्न भागों में व्यापारिक प्रभुत्व के लिए संघर्ष कर रहे थे। बिहार, जो बंगाल प्रांत का हिस्सा था, इस प्रतिस्पर्धा का महत्वपूर्ण केंद्र बन गया। अंग्रेज़ों ने व्यापारिक सुविधाओं के नाम पर स्थानीय प्रशासन से विशेष अधिकार प्राप्त किए और धीरे-धीरे अपनी सैन्य शक्ति का भी विस्तार किया।

बिहार की अर्थव्यवस्था मुख्यतः कृषि आधारित थी। किसान पारंपरिक रूप से धान, गेहूँ, दालें और अन्य खाद्यान्न फसलें उगाते थे। परंतु अंग्रेज़ों की नीतियों ने कृषि उत्पादन की दिशा बदल दी। उन्होंने नकदी फसलों, विशेषकर अफीम और नील, की खेती को बढ़ावा दिया, क्योंकि इनकी अंतरराष्ट्रीय बाज़ार में अधिक मांग थी। इससे किसानों को बाध्य होकर अपनी पारंपरिक फसलों की जगह नकदी फसलें उगानी पड़ीं। परिणामस्वरूप खाद्यान्न उत्पादन में कमी आई और कई बार अकाल जैसी स्थितियाँ उत्पन्न हुईं।

पटना, मुंगेर और भागलपुर जैसे नगर व्यापारिक गतिविधियों के प्रमुख केंद्र बन गए। अंग्रेज़ कंपनी ने स्थानीय व्यापारियों को अपने अधीन कर लिया और व्यापार पर एकाधिकार

स्थापित करने का प्रयास किया। भारतीय व्यापारियों की स्वतंत्रता धीरे-धीरे समाप्त होने लगी। कंपनी के अधिकारी राजस्व वसूली में हस्तक्षेप करने लगे और प्रशासनिक नियंत्रण अपने हाथ में लेने लगे। इस प्रकार व्यापार के माध्यम से प्रारंभ हुआ हस्तक्षेप राजनीतिक प्रभुत्व में बदलने लगा।

यह आर्थिक परिवर्तन केवल उत्पादन तक सीमित नहीं था, बल्कि समाज के विभिन्न वर्गों को प्रभावित कर रहा था। कारीगरों और हस्तशिल्पियों को नुकसान हुआ, क्योंकि अंग्रेज़ों ने इंग्लैंड में बने मशीन उत्पादित वस्त्रों को भारतीय बाज़ार में उतारना शुरू कर दिया। इससे पारंपरिक उद्योगों का पतन हुआ और बेरोज़गारी बढ़ी। इस प्रकार आधुनिक बिहार की शुरुआत आर्थिक असंतुलन और औपनिवेशिक शोषण के बीच हुई।